

करो हिफाजत कौम की

हंसराज जी महाजन

करो हिफाजत कौम की (कविता)

छोड़ बनावट छोड़ दिखावट, करो सजावट कौम की।
प्यार मुहब्बत और वफा से, करो इबादत कौम की ॥

जग में आज महाजन जाति, का बड़ा ही नाम है।
दुनियां के कोणां कोणां में, फैला कौम का नाम है ॥
बरकरार रखनी सदा ही, शहिनशाहत कौम की - प्यार ०

छोटी छोटी बातों को तुम, मसला बनाना छोड़ दो ।
बेमतलब की कल्म जुबां से, तीर चलाना छोड़ दो ॥
सुलझालौ हर उलझन मिलकर, लगी अदालत कौम की - प्यार ०

राग द्वेष का कोहड़ कहीं, अपंग हमें न कर डाले।
कुर्सी का यह जंग कहीं, अधरंग हमें न कर डाले ॥
राष्ट्र देश समाज की सेवा, करो सदा तुम शौक से - प्यार ०

बुरी कुरीति और बुराई, झूठी शोहरत छोड़ दो।
बनकर निष्ठावान व्यक्ति, नाता कौम से जोड़ दो ॥
निज आत्म मन्थन कर निशदिन, करो हिफाजत कौम की - प्यार ०

मानसरोवर का हंस, मोति बिखराकर चला गया।
भगती ज्ञान कर्म योग का, पाठ पढ़ाकर चला गया ॥
अब तुम्हारे ही हवाले, है अमानत कौम की-प्यार०

जाति हित में श्रद्धा भगती, प्रेम प्यार और भाव से ।
आवो मिल उत्सव मनावो, मन लगन और चाव से ॥
प्रण ले आज 'मधुप' कर डालो, पुख्ता इमारत कौम की - प्यार ०

कवि : [सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' \(मधुप हरि जी महाराज\) अमृतसर \(9814668946\)](https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36805/title/karo-hifazat-kaum-ki)

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36805/title/karo-hifazat-kaum-ki>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |